बाबा कहने से मालूम पड़ा कि बाबा से तो हम फिर स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं, बेहद का वर्सा ले रहे हैं और जैसे बाबा शाम को भी समझाया बच्चों को कि ये बच्चों को मालूम है कि दुनिया के मनुष्य मात्र तो फिकरात में ही रहते हैं। कोई–न–कोई फिकर, कोई को बीमारी का, कोई को बच्चों का, कोई को किसका, कोई को किसका, किसको नौकरी का। ...फिकरात के ढेर रहते हैं। टोकरा भरा हुआ रहता है मनुष्यों में बुद्धि के फिकरात का। तो अभी भारत में ही ये गायन भी होता है ना बच्चे कि फिकर से फारख(फारिग़) स्वामी। अभी स्वामी कहा ही जाता है एक को। समझा ना बच्चे! यूँ अगर कहें कि सभी भक्ति, तो एक भगवान। तो सभी ब्राइड्स और वो स्वामी हो गया ब्राइडग्रूम। ऐसे है ना बच्चे। तो उसको स्वामी भी कहा जाता है। वो तो हद के स्वामी हैं ना बच्चे। ये हैं बेहद के स्वामी। तो कहा जाता है कि स्वामी किंदा सतगुरू फ़िक्र से फारख(फारिग़)। दुःखहर्ता और सुखकर्ता। इंगलिश में भी कहते हैं–लिबरेटर। लिबरेटर पीछे फट से गाइड कह देते हैं। क्यों? लिबरेट करके क्या करते हैं? यहीं छोड़ देते हैं क्या? नहीं, बोलता है–रावण राज्य से लिबरेट करके फिर साथ में ले जाते हैं। कहाँ ले जाते हैं? शांतिधाम और सुखधाम। अभी ये समझ ..... कि सुखधाम में मनुष्य कितने और दुःखधाम में मनुष्य कितने। ये तो अभी भी समझ सकते हैं ना बुद्धि से। दूसरे मनुष्य की बुद्धि नहीं चलती है; क्योंकि उन्हों को तो शास्त्रों में और गुरुओं ने और फलानों ने समझाय दिया कि सतयुग को लाखों बरस हुआ। तो कुछ भी पता नहीं बिल्कुल। कहाँ लाखों बरस! सो भी एक सतयुग का, फिर फलाने द्वापर, फिर त्रेता। कहाँ 5000! देखो, फर्क! अज्ञान अंधेर विनाश। यानी कहाँ से विनाश? सारे विश्व से अज्ञान अंधेर विनाश। ऐसे नहीं कि एक मनुष्य का, अपने फॉलोअर का कोई अंधेरा दूर करते हैं। नहीं। कि उनकी महिमा ही ऐसे है। गाते अच्छे हैं, समझते कुछ नहीं हैं। इसलिए बाबा समझाते हैं ना– ये मनुष्य जो भी कुछ ईश्वर के कीर्तन वगैरह करते हैं भक्तिमार्ग में, वो भक्ति वगैरह जो कुछ करते हैं, वो ऐसे ही करते हैं जैसे ढेंढरों की महफिल होती है ना, ट्रां–3 कितनी अच्छी तरह से बैठ करके करते हैं, अर्थ कुछ भी नहीं है। तैसे ये वेद,ग्रंथ,उपनिषद बड़े धूमधाम से, रावण कैसे बैठ करके धुनि सिमरते हैं। ये ढेंढर के माफिक पढ़ते हैं, अर्थ कुछ भी नहीं और गालियाँ ही हैं....। अरे, अर्थ के बदली में और ही अनर्थ कर रहे हैं, ग्लानि कर रहे हैं। एक तरफ में शिवबाबा की पूजा करनी। अच्छा, दूसरे तरफ में ठक बोल देना– कच्छ अवतार, मच्छ अवतार, वाराह अवतार और ठिक्कर–2 में। अरे, कहाँ पूजा करते हो और फिर कहाँ उनको गालियाँ देते हो! बोलने से गालियाँ देते हो और वहाँ जा करके बैठके पूजा करते हो। तो ये अनर्थ हुआ ना बच्ची। अर्थ कुछ भी नहीं जानते हैं इतने सारे साधु,संत,महात्मा। अभी शिवोऽहम् कहते हैं, ये तो बड़ा अनर्थ हुआ ना बच्ची और फिर शिवोऽहम् करके तत् त्वम्। अभी तत् त्वम् भी शिवोऽहम्, तुम भी शिवोऽहम्, फिर एक/दो की पूजा ही क्यों करने की दरकार है? पूजा होती है पूज्य की। तो ये भी पूज्य, ये भी पूज्य, फिर पूजा... तो इतना अज्ञान अंधेरा है, इसको ही कहा जाता है–घोर अंधियारा। तो ये तो समझ में आता है ना बच्ची, जब रात का 12 बजते हैं ना, तो उनको घोर अंधियारा कहा जाता है। तो ये भी आधाकल्प रात तो घोर अंधियारा। फिर सुबह हुआ। तो ये बेहद का घोर अंधियारा पूरा होता है। फिर बेहद का घोर सोझरा आधा कल्प। उसी के लिए तो गाया जाता है ना– ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात। ब्रह्मा का नाम क्यों, दिन–रात तो मनुष्यों की होती रहती हैं? ये शास्त्रों में ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात क्यों गाई है? तो कहा जाता है कि आधा कल्प ब्रह्मा की रात, आधा कल्प ब्रह्मा का दिन। अभी ब्रह्मा का तो हो नहीं सकते हैं ना। ब्रह्मा तो बदल होते हैं ना। नाम देते हैं ऐसे, इस समय में ब्रह्मा वास्तव में रात में है। सो अभी दिन में आ रहा है। ब्रह्मा की रात पूरी होती है, तो ब्राह्मणों की रात पूरी होती है; क्योंकि ...दिन–रात ही तो तुम ब्राह्मणों की गाई जाती है ना। कि तुम्हारा ही पार्ट है ऐसा; क्योंकि अभी तुम

ब्राह्मण रात में हो, घोर अंधियारे में हो और तुम्हीं ब्राह्मण, दूसरे शूद्र वगैरह नहीं, गायन तुम्हारा है। तो ब्राह्मण से अभी तुम जानते हो कि हम सतयुग के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। तो बाबा ने समझाया ना बच्चे कि सतयुग में कोई प्रकार का फिक्र होता नहीं है। तो बाप धीर्य देते हैं– धीर्य धरो, बाकी बच्चेऽऽ 10 बरस हैं। आगे तो ऐसे नहीं बताते थे– कितना। अभी तो बता दिया है और कोई कारण बन गया बताने का कि चलो बच्ची, अभी बताओ तो पुरुषार्थ करें। क्यों पुरुषार्थ करें? बोलो–हम इतना दिन से पुरुषार्थ करते आए हैं, अभी तलक भी कर्मातीत अवस्था को नहीं पहुँचे हैं। तो हिसाब करो कि तुमको अभी जो कर्मातीत अवस्था में पहुँचना है, बाकी तुम्हारे लिए 10 बरस। हम 20 बरस, 25 बरस पुरुषार्थ करते आए हैं, तो भी अभी कर्मातीत अवस्था में नहीं पहुँचे हैं; क्योंकि ये सभी जो ज्ञान की गुह्य बातें कि तमोप्रधान हैं, अभी सतोप्रधान बनना है, सो तो अभी बाबा ने समझाया है। इसलिए तुम जास्ती याद में रहते हो। तो नए को भी ऐसे ही समझा(...)–तो भई, हमको इतना बरस लगा, अभी तुमको तो, बाकी टाइम थोड़ा है, इसलिए पुरुषार्थ जल्दी–2 करो। जैसे कॉलेज में कोई देरी से आते हैं तो उनको पुरुषार्थ जास्ती करना पड़ता है ना कि भई, दो/तीन महीना तो हम देरी से आए हैं कॉलेज में, तो हमको रात–दिन को खूब पुरुषार्थ करना चाहिए। तो बाबा भी ऐसे ही बच्चों को कह(...)–कर्मातीत अवस्था में जाना है अर्थात् सतोप्रधान बनना है। तो ये फिक्र हुआ ना बच्ची तुमको। अभी तुम्हारे पास फिक्र ये एक है कि हम सतोप्रधान(...)। हम जो सतोप्रधान थे, जब आए थे पहले तो सतोप्रधान थे, सतयुग में आए। अभी जो हमको मालूम पड़ गया कि हम तमोप्रधान बन गए हैं, अभी हमको सतोप्रधान इस जन्म में ज़रूर बनना है, कैसे भी करके बनना है। जितना सतोप्रधान बनेंगे, जितना सतोप्रधान गोल्डन एज में जाएँगे(...) अगर कम होंगे तो सज़ा भी खाएँगे, फिर देरी से आएँगे। तो पुरुषार्थ है ना बच्चे। युक्ति से पुरुषार्थ भी कराते हैं। तो देरी वाले, भले इनसे भी देरी से आएँगे, तो वो फिर जास्ती पुरुषार्थ करेंगे, फुर्णा रहेगा उनको। तो उठते–बैठते जितना कोशिश होगा, बोलेगा– अभी तो हमको बहुत गैलेप करना है, नहीं तो ये आगे बढ़ जाएँगे, हम नीचे पड़ जाएँगे। ये भी बच्चे जानते हैं कि बरोबर ड्रामा के प्लैन अनुसार जिन्होंने जैसे–2 कल्प पहले भी पुरुषार्थ किया है, वो पुरुषार्थ करते रहते हैं। ये हम साक्षी हो करके देखते हैं। ड्रामा के ऊपर नहीं ठहर जाना है– ड्रामा में जो होगा सो होगा। ऐसी बहुत मूर्ख बुद्धि आते हैं, बोलते हैं–अगर ड्रामा के ऊपर सारा मदार है, तो और कल्प पहले भी ड्रामा ने हमको पुरुषार्थ कराया होगा तो कराएगा। आपे ही हम पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगे। न कराया होगा तो न करेंगे। ऐसे भी मूर्ख मिलते हैं, आते हैं ढेर, जो पूरा न समझकर फिर ड्रामा के ऊपर छोड़ देते हैं। फिर हम पुरुषार्थ क्यों करें! ड्रामा को पुरुषार्थ कराना होगा तो आपे ही कराएँगे। अभी उनको पुरुषार्थ कराना होगा, शिवबाबा को याद कराना होगा तो हम करेंगे। न कराना होगा तो न करेंगे। ऐसे भी चरिये–खरिये कर देते हैं। मूर्ख बुद्धि तो हैं ही। बाप तो कहते हैं ना सबको– तुम कितने मूर्ख बुद्धि बन गए हो। तुमको कितना स्वच्छ बुद्धि बनाया था। तुमको भेजा था। अभी याद है ना तुम भारतवासियों(...) और कहते ही भारतवासियों ...। घर आते ही हैं ना। बर्थ प्लेस भी तो यहाँ है ना बच्चे। तो ये भी जैसे ईश्वरीय मिशन है बच्ची, दैवी धर्म की; क्योंकि ये ईश्वर ही देवी–देवता धर्म की स्थापना करते हैं। तो ये भी मिशनरी है ना बच्चे। बौद्धियों की मिशनरी, क्रिश्चियन की मिशनरी। ये इस्लामियों की मिशनरी है। वो भी अपने धर्म की तरक्की करते हैं। अभी तुम देवी–देवता धर्म की(...)। तुमको बाप आ करके इस मिशनरी की, देवी–देवता धर्म की स्थापना कराने में पुरुषार्थ कराते हैं; क्योंकि स्थापना यहाँ होनी है। दुनिया में कोई नहीं जानते हैं कि संगम, क्यों संगम कहा जाता है। उत्तम है; क्योंकि बाप आते हैं ना बच्ची। सो भी भारत में आते हैं। ये भारत की महिमा ही अपरम्पार है। जैसे ईश्वर की महिमा अपरम्पार, तैसे तुम्हारी महिमा अपरम्पार, तैसे स्वर्ग की महिमा अपरम्पार, ऐसे भारत की महिमा अपरम्पार। वैसे वास्तव में गीता ज्ञान की महिमा

अपरम्पार; परन्तु नाम जो दूसरा दे दिया है ना बच्चे। नहीं तो सर्व का, क्राइस्ट का पतित–पावन शिव। शिव का बर्थ प्लेस यहाँ। वो भी इस समय में तुम जानते हो कि क्राइस्ट,बौद्ध,इस्लाम,नानक वगैरह–2 सब पावन हो रहे हैं ... पावन होंगे; क्योंकि विनाश होगा ना बच्ची। हिसाब–किताब चुक्तू होकर सभी को पावन बनना है। फिर वापस जाना है। फिर अपने समय पर आ करके और धर्म स्थापना करनी है। तो तुम क्या करते हो, तुमको ये पूछते हैं ना– भारत को भ्रष्टा(...)। बोलो– नहीं, भारत जब श्रेष्ठाचारी हो जाते हैं तो सारी विश्व ही श्रेष्ठाचारी। विश्व में मनुष्य ही नहीं हैं ना। भारत है श्रेष्ठाचारी। भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठा(...)। बाकी मनुष्य को ऐसे नहीं कहेंगे– श्रेष्ठाचारी। दुनिया में होंगे ना, वो श्रेष्ठाचारी आत्मा जो बनते हैं ना, वो फिर आत्मा के इनकारपोरियल वर्ल्ड में या आत्माओं के लोक में शांतिधाम में होंगे। श्रेष्ठाचारी सब बनते हैं। समझा ना बच्ची! बाप आते हैं तो सबको ही सद्गति देना है, सबको ही इस दुःख से, भ्रष्टाचार से लिबरेट करना है अर्थात् रावण से लिबरेट करना है, रावण के ये पाँच विकारों से। तो पीछे तो सभी श्रेष्ठाचारी हुए ना। आत्माएँ प्योर हो गईं। है सारा, ये किसको हम भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी? आत्मा को बनाते हैं ना। वो ऐसे नहीं समझते हैं कि आत्मा बनती है इसलिए ... आत्मा में नहीं जाते हैं जब तुम उनको समझाते हैं। वो शरीर पर जाती है। ...को हेल भी कहते हैं। समझा ना! अख़बार में मैं समझता हूँ कोई एम०पी० ने भी ये आर्टिकल डाली थी– बाइस्कोप में जाना गोया हेल में जाना है। वो हैं ही प्यार और विकार की बातें। तो विकार की बातें तो हेल में ही होती हैं ना बच्चे! बल्कि बहुत छी–2 बातें। तो बाबा बाइस्कोप में जाने के लिए भी मना करते हैं। कोई हालत में बाबा छुट्टी देते हैं कि कोई मित्र–संबंधी आते हैं विलायत–2 से, तो वो हुज्जत उठाते हैं, तो बाबा फिर बोलते हैं– अच्छा बच्चे, साक्षी हो करके, इनको रंज न होवे। (म्युज़िक बजा) मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडनाइट।

मैजॉरिटी भी बहुत हैं इकट्ठी। कुमारियाँ भी हैं फिर। इसलिए बच्चों को राज़ी करने के लिए कि अच्छा, जो कुछ हुनर सीखी हैं कोई भी, तो भले बताओ। बाप कहते हैं ये डान्स भी कर्म है ना। ये कर्म करते रहो, याद बाप की। ये कौन कहते हैं? खुद माशूक सभी आशिकों को कहते हैं; क्योंकि ये सारी दुनिया में जो भी आत्माएँ हैं, इस समय में, भक्तिमार्ग में, वो माशूक के आशिक हैं, याद करते रहते हैं। माशूक को याद किया जाता है किसलिए? सुख के लिए। ऐसे है ना बच्ची। तो ये तो है ही सलोना, बहुत सुख देने वाला माशूक। तो ये तुम्हारा योग अभी, माशूक खुद आ करके आशिकों से; क्योंकि तुम आधा कल्प आशिक रहे हो। सतयुग और त्रेता में तुम आशिक नहीं रहते हो, कभी माशूक को याद नहीं करते हो; क्योंकि इस समय माशूक आ करके तुम सभी आशिकों को, सारी दुनिया को, सबको लिबरेट करते हैं दुःख से। फिर सुख और शांति में ले जाते हैं। सतयुग है तो सुख भी है, शांति भी है और भारतवासी हो और बाकी जो इतने अनेक धर्म वाले हैं वो सभी शांति में हैं। कोई भी फिर जब आएँगे यहाँ तो पहले सुख में आएँगे। तो गोया सबका दुःखहर्ता, सुखकर्ता। कि जो कोई भी पहले–2 वहाँ से आते हैं, सतोप्रधान बनकर जाते हैं ना बच्चे। पीछे जो भी आते हैं उनको पहले है सुख। सतोप्रधान,सतो,रजो,तमो। उनको थोड़ा टाइम मिलते हैं, तुमको बहुत टाइम मिलते हैं। और कोई को भी नहीं कहा जाता है। इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन वालों को ये टाइटिल्स नहीं दिए जाते हैं। ये गाया ही भारत के लिए है कि कौड़ी जैसे; क्योंकि भारत बनते हैं कौड़ी जैसा। ये भारत ही है जो फिर हीरे जैसा बनते हैं। और कोई भी धर्म ऐसा नहीं बनते हैं।

(अधूरी मुरली)